एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

शीत ऋतु में फलदार वृक्षों की देखभाल

(*डॉ. पी. के. हटवाल, प्रो. आर. एस. मीना, डॉ. एस. एल. यादव, डॉ. मोहित कुमार, डॉ. जी. के. कोली,
डॉ. राहुल कुमार, डॉ. श्वेता सिंह, भानुप्रिया पंकज एवं डॉ. विनोद भटेश्वर)
कृषि महाविद्यालय, भुसावर (वैर), भरतपुर (एस. के. एन. ऐ. यू., जोबनेर, जयपुर)
*संवादी लेखक का ईमेल पता: pvhorti88@gmail.com

शीत ऋतु की जाड़े की ठिठुरन लिए जनवरी –फरवरी भले ही शहरो के काम ढीले कर दे, मगर बागवानी करने वाले किसान भाइयों के लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण माह है। फलीय वृक्षो से अधिक और उच्च गुणवत्ता के उत्पादन के लिए बगीचे की देखभाल अत्यंत आवष्यक है। फलदार वृक्षो की बहुवर्षीय प्रकृति के कारण इनकी देखभाल तथा रखरखाव धान्य /षाकीय फसलों से भिन्न होती है। इसी को मद्देनजर रखते हुए महत्वपूर्ण फल वृक्षो में जनवरी–फरवरी में की जाने वाली प्रमुख कृषि क्रियाओ का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:–

आमः जनवरी में नर्सरी में लगे पौधो को पाले से बचाव हेतु छप्पर अथवा दूसरे किसी आवरण से ढककर रखना चाहिऐ, वही दूसरी ओर छोटे पौधो को भी पुआल से ढक देना चाहिऐ। पाले से बचाव के लिए बाग में समय–समय पर हल्की सिंचाई करे। बागो की निराई–गुडाई एवं सफाई का कार्य करें। आम के नये स्थापित किये गये बागो की सिंचाई करे ।

जनवरी के प्रथम सप्ताह में आने वाले बौर में फल नही लगते और ये अक्सर गुच्छे का रूप धारण कर लेते है। अतः ऐसे बौर को निकालकर नष्ट कर देवें, आम में उर्वरक देने का यह सही समय है। नाइट्रोजन 500 ग्राम, फॉस्फोरस 500 ग्राम तथा पोटाष 600–700 ग्राम प्रति पौधा प्रयोग करें। इन्हे मिट्टी में अच्छी तरह मिलाकर हल्की सिंचाई कर देवें। बागो की निराई–गुडाई एवं सफाई का कार्य करे।

फरवरी माह मे थालो की गुडाई करें। मैंगो हॉपर/फुदका/तेला के नियंत्रण के लिए थायोडॉन (0.2%) तथा चूर्णिल आसिता (पाउडरी मिलड्यू) रोग से बचाव के लिए कैराथेन (20 ग्राम प्रति 100 ली. पानी में घोलकर) का छिड़काव फरवरी के अंतिम सप्ताह में करें। फरवरी में छोटे पौधो के उपर से छप्पर हटा दे। मिलिबग(गुजिया) के बचाव के लिए वृक्षो के तने पर पॉलीथीन की 3 फुट चौडी पट्टी बाँध देवें एवं पौधो की अपेक्षा जमीन पर किसी भी कीटनाषी का छिड़काव प्रौढ कीटों को मारने के लिए करे। ध्यान रखने योग्य बात है कि इन्ही दिनों पौधो पर फूल आते है और यदि किसी कीटनाषक का प्रयोग फूलों पर किया गया तो संपूर्ण परागण न होने से कम फल लगेंगे।

नींबूवर्गीय फलः नींबूवर्गीय फलदार पौधो में जनवरी माह मे एक–दो सिंचाई कर देनी चाहिए तथा पाले से बचाने के हरसंभव उपाय अपनाने चाहिए। मूलवृंत तैयार करने के लिए बीज की बुवाई पॉलीथीन में करे। प्रति पौधा 400 ग्राम नाइट्रोजन, 200 ग्राम फॉस्फोरस तथा 400 ग्राम पोटाष का प्रयोग 50 किलोग्राम गोबर की खाद के साथ करके हल्की सिंचाई कर देवे। बागो की निराई–गुडाई एवं सफाई का कार्य करें।

फरवरी माह में फूल आने से कुछ दिन पहले सिंचाई नही करें अन्यथा सभी फूल झड़ सकते है। यदि फूलों या फलों के गिरने की समस्या अधिक हो तो 2-4,D (10 ग्राम प्रति 100 ली. पानी में घोलकर) का छिड़काव करे। फल लगते समय पर्याप्त मात्रा में नमी बनाए रखे। नये पौधे तैयार करने हेतु फरवरी के अंत में कलिकायन (बडिंग) का कार्य किया जा सकता है।

अमरूद: जनवरी माह में अमरूद के बागो में फलों की तुड़ाई का कार्य जारी रखे। तुड़ाई का सबसे अच्छा समय सुबह का होता है। फलों को उनकी किस्मों के अनुसार अधिकतम आकार तथा परिपक्व–हरे रंग (जब फलों की सतह का रंग गाढ़े से हल्के हरे रंग में परिवर्तित हो रहा हो) पर तोडना चाहिए। इस समय फलों से एक सुखद सुगंध भी आती है, यह अवष्य ध्यान रखें कि अत्यधिक पके हुये फलो को तोडे गये अन्य फलों के साथ मिश्रित नही किया जाये। प्रत्येक फल को अखबार में लपेट कर पैक करने से फलों का रंग और भण्डारण क्षमता बेहतर होती है। फलों को पैक करते समय उन्हें एक–दूसरे से रगड़ने पर होने वाली खरोंच से भी बचाना चाहिए। इसके लिए आवष्यक है कि बक्से के आकार के अनुसार ही उनमें रखे जाने वाले फलों की संख्या निर्धारित हो। जनवरी माह में पत्तियों पर कत्थई रंग आना सूक्ष्म–पोषक तत्वो की कमी के कारण होता है, अतः कॉपर सल्फेट तथा जिंक सल्फेट का 0.4 प्रतिषत की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

फरवरी माह में आने वाले फूलों को तोड़ देवें ताकि वर्षा ऋतु में आने वाली कम गुणवत्ता वाली फसल की अपेक्षा जाड़े वाली अच्छी फसल को लेने के लिए फूलों की तुड़ाई के अतिरिक्त NAA(नेफ्थलीन एसिटिक अम्ल)100 PPM का छिड़काव करें एवं सिंचाई कम कर देवें। फरवरी कके दूसरे पखवाडे में कँटाई–छँटाई का कार्य शुरू कर देना चाहिए, इसको मार्च माह के प्रथम सप्ताह तक जारी रखा जा सकता है। पिछले मौसम मे विकसित शाखाओं के 10–15 सेमी. अग्र भाग को काट देना चाहिए। इसके अतिरिक्त टूटी हुई, रोगग्रस्त, आपस में उलझी हुई शाखाओ को भी निकाल देना चाहिए। कँटाई–छँटाई के तुरन्त बाद कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (2–3 प्रतिषत) का छिड़काव अथवा बोर्डोपेस्ट का शाखाओ के कटे भाग पर लेप कर देना चाहिए। बागो की निराई–गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें। अमरूद के नवरोपित बागों की सिंचाई करें।

बेर: बेर मे पाउडरी–मिलड्यू (चूर्णिल–आसिता) रोग अत्यधिक हानि पहुँचाता है। इससे बचने के लिए फरवरी में 0.2 प्रतिषत केराथेन का छिड़काव कर देवें। 15 दिनों के अंतराल पर दोबारा यही छिड़काव कर देवे। फरवरी में बेर की अगेती किस्में पकने लगती है। इस फसल की तुड़ाई कर उचित बिक्री की व्यवस्था करें। बागों की निराई–गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें।

कटहल: यदि दिसम्बर के माह मे कटहल फल–वृक्षों में खाद एवं उर्वरक नहीं दिए गए हों तो जनवरी माह में यह कार्य पूर्ण करें। छोटे पौधो की वाले से रक्षा के उपाय करें। फरवरी के अंत में मिली–बग के प्रकोप से बचने के लिए पेडों पर आम की भाँति पॉलीथीन की पट्टी लगाए।

ऑवला: उत्तर भारतीय जलवायुवीय परिस्थितियों में ऑवले के फलों की तुड़ाई जनवरी–फरवरी माह तक जारी रहती है। अतः इन क्षेत्रो में इस दौरान फलों से लदे हुए वृक्षों को बाँस–बल्ली की सहायता से सहारा देने की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि शाखाओं को टूटने से बचाया जा सकें। अतः बिक्री की उचित व्यवस्था करें। चूँकि इस दौरान फलों का भी विकास होता है, अतः सिंचाई की भी समुचित व्यवस्था होनी चाहिए, परन्तु ध्यान रहे कि तुड़ाई से 15 दिन पहले सिंचाई रोक देनी चाहिए, ताकि फल समय से तैयार हो सकें। जिन क्षेत्रो में सिंचाई की समुचित व्यवस्था हो, उन क्षेत्रो में बसंत के आगमन के साथ ही पौध रोपण का कार्य फरवरी के दुसरे पखवाड़े से प्रारम्भ किया जा सकता है। जो कि मार्च माह तक जारी रखा जा सकता है, साथ ही जिन क्षेत्रों में शीत ऋतु में पाले की आषंका हो, वहॉ गँधक के अम्ल(0.1प्रतिषत) का छिड़काव पूरे वृक्ष पर कर देना चाहिए। जरूरत पड़े तो छिड़काव को दोहराना चाहिए।

फरवरी में फूल आने का समय होता है, जो नई पत्तियों के साथ आते है। इस समय सिंचाई नही करें। ऑवला के बाग में गुड़ाई करें एवं थाले बनाए।

ऑवले के 1 वर्ष के पौधे के लिए 10 कि.ग्रा. गोबर/कम्पोस्ट खाद, 100 ग्राम नाईट्रोजन, 50 ग्राम फॉस्फेट एवं 75 ग्राम पोटाष देना आवष्यक होगा। 10 वर्ष या इससे उपर के पौधे में यह मात्रा बढाकर 100 कि.ग्रा. गोबर/कम्पोस्ट खाद, 1 कि.ग्रा. नाईट्रोजन, 500 ग्राम फॉस्फेट व 750 ग्राम पोटाष की आवष्यकता होगी। उक्त मात्रा से पूरा फॉस्फोरस, आधी नाईट्रोजन एवं पोटाष की मात्रा का प्रयोग जनवरी से करें। बागों की निराई–गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें।

फालसा: उत्तरी भारत में फालसे में जनवरी में गहन काँट–छाँट करनी चाहिए। काँट–छाँट के बाद कटे भागो पर बोर्डो–पेस्ट लगा देवें। पौधो को उपयुक्त मात्रा में गोबर की खाद और उर्वरक देवें।

पपीता: पपीते को पाला अत्यधिक हानि पहुँचाता है। अतः जनवरी में पाले से बचाने के लिए पर्याप्त प्रबंध करें। पौधो को पुआल से ढ़क देवे तथा समय पर सिंचाई करते रहें। पुआल को फरवरी के अंत में हटा देवें। 25 ग्राम नाइट्रोजन, 50 ग्राम फॉस्फोरस तथा 100 ग्राम पोटाष का प्रयोग फरवरी में प्रति पौधा की दर से करें। बागो की निराई–गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें। पपीता के नवरोपित बागो की सिंचाई करें।

खजूर: जनवरी–फरवरी में खजूर के बागों में कई महत्वपूर्ण कार्य किये जाते है। जिनमे कँटाई–छँटाई, उर्वरकों का प्रयोग तथा परागण प्रमुख है। खजूर के पौधे एक बीज पत्रीय तथा एकल तना होने से शाखित नहीं होते है। अतः रोगग्रस्त, सूखी, पुरानी, क्षतिग्रस्त पत्तियों को सर्दियों में हटा देना चाहिए। फल गुच्छों से सटी हुई पत्तियों के डंठलो से काँटे निकालना आवष्यक है ताकि उनके आसपास परागण, फल गुच्छों की छंटाई, डंठल मोड़ना, रसायनों का छिड़काव, थैलियां लगाना एवं फलों की तुड़ाई आदि कार्य सरलता से हो सकें। पत्ती को डंठल सहित जितना संभव हो सके मुख्य तने के समीप से हटाया जाना चाहिए ताकि मुख्य तने की सतह को चिकना रखा जा सके। फलः गुच्छा अनुपात 1:6 रखने पर अधिक फल उत्पादन एवं उत्तम गुणवत्ता वाले फल प्राप्त होते है। अतः अच्छी फसल हेतु पूर्ण विकसित वृक्ष पर लगभग 70–100 पत्तियां होनी चाहिए। फॉस्फोरस(0.5 कि.ग्रा.) और पोटाष(0.5 कि.ग्रा.) की पूर्ण मात्रा और नाइट्रोजन की 50 प्रतिषत मात्रा (0.75 कि.ग्रा.) को फूल आने से तीन सप्ताह पहले दिया जाना चाहिए, जो विभिन्न किस्मों में जनवरी–फरवरी के दौरान होता है। तत्पष्चात वृक्षों की सिंचाई की जानी चाहिए।

खजूर में नर एवं मादा पुष्पक्रम अलग–अलग पौधो पर आते है, इसे डायोसियस अवस्था कहा जाता है। अतः अच्छे उत्पादन के लिए कृत्रिम परागण किया जाता है। इसके लिए ताजे एवं पूर्ण रूप से खुले हुए नर पुष्पक्रमों को अखवार अथवा पॉलीथीन की चादर पर झाड़कर एकत्रित कर लेते है। मादा पुष्पक्रमों को जो तुरन्त खिले हो, परागकणों में डुबोए गए रूई के फोहो से दो–तीन दिन लगातार प्रातः काल परागित करे या नर पुष्पक्रमों की लड़ियों को काटकर खुले मादा पुष्पक्रम के मध्य में उल्टा करके हल्के से बाँध दिया जाना चाहिए, जिससे उनमें से परागकण धीरे–धीरे गिरते रहें। जनवरी–फरवरी में लेसर डेट मोथ कीट के लार्वा परागकणों को खाकर नुकसान पहुँचा सकता है।

स्ट्रॉबेरी: जनवरी में स्ट्रॉबेरी के खेत में निराई–गुड़ाई करें। यदि पलवार नहीं बिछाई गई हो तो वाँछित पलवार जैसे पुआल या पॉलीथीन का प्रयोग करें। फलों में उच्च गुणवता प्राप्त करने के लिए फरवरी माह की शुरूआत में जिब्रेलिक अम्ल (75 PPM) का छिड़काव करें। तथा समय पर सिंचाई करते रहें। पत्तियों पर यदि धब्बे दिखाई पड़े तो डाइथेन-M-45 (2 ग्राम प्रति ली. पानी में) अथवा बाविस्टिन (1 ग्राम प्रति ली. पानी) का छिड़काव करे। पहाड़ी क्षेत्रो में किसान भाई स्ट्रॉबेरी को केवल नए पौधे तैयार करने के लिए लगाते है। अतः यदि फरवरी के अंत में पौधो पर फूल आ रहें है, तो उन्हे तुरन्त हटा देवें। परन्तु मैदानी भागों में किसान भाई ऐसा नही करे। मैदानी भागों में फरवरी में स्ट्रॉबेरी की फसल तैयार हो जाती है। इसे तोड़कर 250 ग्राम के पैकेट में पैक कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें।